6

हर किसी को किसी न किसी की आवश्यकता होती है

(मत्ती 16:13-19)

मनुष्य की रचना के बाद, परमेश्वर ने कहा, ''आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं'' (उत्पत्ति 2:18)। अकेलापन बड़ी बुरी चीज़ है।

> [अकेलेपन] को वह कष्ट बताया गया है जो किसी भी और महामारी से बढ़कर लोगों को सताता है। एक प्रसिद्ध स्विस मनोवैज्ञानिक ने इसे ''इस युग का सबसे भयंकर रोग'' कहा है। और हाल ही में एक प्रसिद्ध डॉक्टर ने कहा है, ''इसके जैसी गम्भीर या इतनी व्यापक मानवीय स्थिति और कोई नहीं है।''[1]

जीवन में हम सब को ''एक नेटवर्क'' या सहायक समूह की आवश्यकता रहती है।[2]

आत्मिक क्षेत्र में भी यही बात है। परमेश्वर कह सकता है था कि ''मसीही बनने के बाद, तुम अपने सिर पर संभालो।'' परन्तु उसे मालूम था कि हम सब को सामर्थ की आवश्यकता होती है, यानी हम सब को सहायता की आवश्यकता पड़ती है। यह पाठ परमेश्वर के सहायक समूह बनाने के लिए यीशु की प्रतिज्ञा के बारे में बताता है। इस पाठ से जुड़े बाइबल के वचन मत्ती 16:13-19 से भी परमेश्वर द्वारा हमारे लिए उपलब्ध करवाई गई और सहायता का सुझाव मिलता है।

यीशु अपनी निजी सेवकाई को पूरा करने वाला था। लूका 9:51 के शब्दों का इस्तेमाल करें तो शीघ्र यीशु ने ''यरूशलेम जाने का विचार दृढ़ किया।'' यीशु के लिए यह समय बड़ा महत्वपूर्ण था। उसके शिष्यों के लिए यह बड़ा महत्वपूर्ण समय था।

आपको व्यक्ति की आवश्यकता है

हमारे वचन पाठ का आरम्भ ''यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया'' (आयत 13) के साथ होता है।

पलिश्तीन में कैसरिया नामक दो नगर थे। एक भूमध्य सागर के किनारे था। इस आयत वाला कैसरिया पलिश्तीन के उत्तर पूर्व में था। यीशु के जन्म से कुछ वर्ष पूर्व ही, हेरोदेस फिलिपुस ने जो चौथाई भाग का राजा था,[3] प्राचीन नगर पनयास को आबाद करके इसका नाम कैसर और अपने नाम से कैसरिया फिलिप्पी रख दिया। इस नगर की एक विशेष बात यह थी कि यह पूरा नगर हरमोन पहाड़ी के नीचे, चूने के पत्थर के एक बड़े चबूतरे पर बसा हुआ था।

लोगों को वचन सुनाते और उनकी सहायता करते हुए आगे बढ़ता हुआ यीशु अपने चेलों के

साथ कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया। पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के समय यीशु उत्तर की ओर यहीं तक आया था।

यीशु ने उस जगह पहुंच कर अपने चेलों की परीक्षा की। परीक्षा या परख गुरु और चेले दोनों के लिए बड़ा भयभीत करने वाला समय होता था। एक प्रकार से परीक्षा की घड़ी चेले से अधिक गुरु के लिए होती थी। गुरु को भय रहता था कि ''मैं जो सिखाना चाहता हूं वह सिखा पाया हूं या नहीं?'' यीशु यह कहकर कि उनकी और परीक्षा लेने लगा कि ''लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?'' (आयत 13)।

चेलों का उत्तर था ''कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यवक्ताओं में से कोई एक कहते हैं'' (आयत 14)। लोग यह तय नहीं कर पा रहे थे कि यीशु कौन है। यीशु मसीहा वाला काम ही कर रहा था, परन्तु वह वैसे नहीं आया, जैसे लोगों का मानना था कि मसीहा आएगा। फिर भी उन्हें यह पता अवश्य था कि वह कोई विशेष व्यक्ति था। इस कारण उनका कहना था कि वे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, एलिय्याह, यिर्मयाह या कोई और नबी था।

कुछ लोगों का विचार है कि यहूदी लोग ऐसा इसलिए कहते थे, क्योंकि उनका विश्वास ''आत्मा के चोला बदलने'' में था जो पुनर्जन्म की आरम्भिक शिक्षा थी। हेरोदेस ने यह अफवाह उड़ा दी थी कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा यूहन्ना था (तुलना मरकुस 6:14, 16)। इसके अलावा यहूदी लोग एलिय्याह के फिर से आने के अनोखे विचारों की बातें करते थे, जिससे यह प्रतिज्ञा जोड़ते थे कि मसीहा के लिए मार्ग तैयार करने परमेश्वर एलिय्याह को भेजेगा (मलाकी 4:4-6)।[4] मुझे यह तो पता नहीं कि यहूदी लोग पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे या नहीं, परन्तु रखते भी थे तो वह गलत शिक्षा थी। बाइबल कहती है, ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना [बार-बार नहीं] और उसके [मृत्यु के] बाद न्याय का होना नियुक्त है [इस पृथ्वी पर किसी और देह में नया जीवन नहीं]'' (इब्रानियों 9:27)।

कुछ लोगों के इस विश्वास के बावजूद कि यीशु इन लोगों में से एक *क्यों* हो सकता है, इन महान व्यक्तियों से उसे मिलाने से यीशु के विषय में कुछ पता चलता है। *यूहन्ना एक दृढ़ निश्चय वाला* व्यक्ति था, जिसने कपट के विरुद्ध बोलने से कोई गुरेज नहीं किया। इसी प्रकार यीशु भी यहूदी लोगों में पाए जाने वाले कपट को सामने लाने से गुरेज नहीं करता था। *एलिय्याह* एक साहसी व्यक्ति था, जो बुराई की शक्ति के विरुद्ध अकेला ही डटा रहा। बिल्कुल इसी प्रकार यीशु भी अपने समय के धार्मिक अगुवों के विरुद्ध डटा रहा। दूसरी ओर *यिर्मयाह करुणा करने वाला* व्यक्ति था, जो लोगों के लिए रोता था, बिल्कुल वैसे ही जैसे यीशु कई बार रोया। यीशु में कुछ लोग कठोर पक्ष को और दूसरे उसके कोमल पक्ष को देखते हैं।

ये सब तुलनाएं एक दूसरे की पूरक थीं, परन्तु वे इससे आगे नहीं बढ़ते थे। जब तक हम यीशु को *सबसे बड़ा* अर्थात परमेश्वर के अपने पुत्र के रूप में नहीं मानते तब तक हमारे किसी भी विचार से शैतान को कोई दिक्कत नहीं होती।

फिर यीशु ने चेलों से परीक्षा का दूसरा प्रश्न पूछा। इस प्रश्न के उन्हें सौ प्रतिशत अंक मिल सकते थे! ''उसने उनसे कहा, परन्तु *तुम* मुझे क्या कहते हो?'' (आयत 15)।

इससे महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं पूछा जा सकता था कि ''*तुम* क्या कहते हो कि यीशु कौन है?''

जब तक आप इस प्रश्न का उत्तर सही नहीं देते तब तक इस जीवन और अनन्तकाल के लिए आप को आवश्यकतानुसार सहायता और समर्थन नहीं मिल सकता।

मैं यदि यीशु की जगह होता तो मैं बड़ा ही अलग तरह का गुरु होता।[5] मेरे विचार कुछ इस प्रकार होते, ''पिछले लगभग तीन वर्षों से अपने छात्रों के मनों पर एक सच्चाई को समझाने के लिए कि मैं कौन हूं, मेरी बातें, मेरे आश्चर्यकर्म, मेरा जीवन खर्च हो गया। क्या तुम्हें यह सच्चाई समझ आ गई है? एक गुरु के रूप में मैं सफल कैसे हो सकता हूं?''

पतरस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया। पतरस अपनी स्पष्टवादिता के लिए और कई बार आवश्यकता से अधिक बोलने और अक्सर अपना पैर अपने मुंह में डालने के लिए प्रसिद्ध है।[6] परन्तु इस बार उसने बिल्कुल सही कहा, ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (आयत 16)! ''मसीह'' का अर्थ ''मसह किया हुआ या अभिषिक्त'' है। यह यूनानी शब्द ''मसायाह'' का समानार्थक है। पुराने नियम के समय में भविष्यवक्ताओं, याजकों और राजाओं को मसह किया जाता था और यीशु भविष्यवक्ता, याजक और राजा तीनों था। ''का पुत्र'' इब्रानी विचारधारा है जिसका अर्थ ''के स्वभाव वाला'' है। इस प्रकार ''जीवते परमेश्वर का पुत्र'' का अर्थ ''परमेश्वर के स्वभाव वाला'' है!

इन व्याख्यात्मक शब्दों को ध्यान में रखें। ये आपको उस *व्यक्ति* के विषय में बताते हैं, जिसकी आपको आवश्यकता है। इस विषय में अधिक कहने से पहले मैं यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि कुछ लोग किन विकल्पों को ढूंढ़ने के प्रयास करते हैं।

''यीशु ने उसको उत्तर दिया कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है[7]'' (आयत 17)। इससे पहले यीशु ने कहा था कि यदि कोई उसका अंगीकार करता है तो वह भी उनका अंगीकार करेगा (मत्ती 10:32) और अब वह पतरस का अंगीकार कर रहा था। यीशु ने आगे कहा कि उस पर यह बात ''मांस और लोहू ने नहीं'' (आयत 17) प्रकट की थी। पतरस को यह सच्चाई किसी मनुष्य से पता नहीं चली थी। मनुष्य की बुद्धि तो लोगों की बहुसंख्या से सहमत होनी थी कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, एलिय्याह, यिर्मयाह या भविष्यवक्ताओं में से एक है। परन्तु, यीशु ने कहा कि पतरस को यह बात परमेश्वर की ओर से पता चली थी: ''परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है'' (आयत 17)। इस प्रश्न पर विचार करें कि पतरस को यह सच्चाई *कैसे* पता चली? क्या उसने यीशु से नहीं सीखा था? *यीशु* ''परमेश्वर की ओर से'' आया था (तुलना करें यूहन्ना 8:28); यानी वह परमेश्वर था!

फिर यीशु ने कहा:

> और मैं भी तुझ से कहता हूं, तू पतरस है। और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा। और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा (आयतें 18, 19)।

पतरस ने पहले ही उत्तर दे दिया था। इसलिए अब वह मण्डली में सामने खड़ा हो गया।[8] हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि पतरस को विशेष पहचान मिली थी।

पहले तो यीशु ने आधिकारिक तौर पर उसे ''पतरस'' कहा। उसे आमतौर पर इसी नाम से जाना जाता है। ''पतरस'' का अर्थ है ''चट्टान।'' यीशु इस बात को मान रहा था कि पतरस ''फिसलने वाली रेत'' से ''चट्टान जैसे मजबूत'' चेले के रूप में तैयार हो रहा था। इसका अर्थ यह नहीं था कि उसका यह बदलना पूरा हो चुका था। (अगले अध्याय में उसने यीशु, मूसा और एलिय्याह के लिए तीन डेरे बनाने का सुझाव देकर फिर से अपना पैर अपने मुंह में डाल लिया। कई अध्यायों के बाद[9] उसने प्रभु का इनकार किया।) ''पतरस'' नाम इस बारे में कि आत्मिक रूप में वह कितना आगे निकल चुका था उसकी बात थी और यह भविष्यवाणी थी कि उसने और कितना आगे जाना था।

दूसरा, यीशु ने उसे राज्य की कुंजियां दे दीं। कुंजियां ऐसा संकेत है जो आमतौर पर पतरस के साथ ही जुड़ा है। (रोम के सेंट पीटर'स बेसिलिका तथा अन्य कई स्थानों पर पतरस को दर्शाती मूर्तियों में इस प्रेरित के हाथ में कुंजियां दिखाई गई हैं।) पतरस को राज्य का फाटक यहूदियों और अन्यजाति दोनों के लिए खोलने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसमें उसने प्रेरितों 2 अध्याय में यहूदियों और प्रेरितों 10 में अन्यजातियों के लिए दरवाज़ा खोल दिया। यानी पतरस को प्रवेश की शर्तें पहली बार बताने का गौरव प्राप्त हुआ था।

आयत 19 में यीशु के ''बान्धा'' और ''खोला'' कहने से क्या अभिप्राय है? इससे संकेत मिलता है कि जब पतरस ने प्रचार करना था तो उसने आत्मिक अगुआई से करना था (यूहन्ना 14:26; 16:13)। जब न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल पहली बार छपी थी तो आयत 19 में मूल बाइबल के कालों का सही संकेत दिया गया था: ''तू जो कुछ पृथ्वी पर बान्धेगा वह स्वर्ग में बान्धा *गया होगा,* और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खोला *गया होगा।*''[10] दूसरे शब्दों में पतरस का संदेश *पहले* स्वर्ग में बान्धा जाना था और *फिर* पृथ्वी पर बान्धा जाना था। उसका संदेश *अपना नहीं* बल्कि परमेश्वर का होना था।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पतरस बहुत विशिष्ट व्यक्ति था। सुसमाचार की पुस्तकों में बारह प्रेरितों की हर सूची में पतरस का नाम सबसे ऊपर आता है। हमें उसे कभी कम करके नहीं मानना चाहिए। दूसरी ओर न ही उसे *आवश्यकता से अधिक* महत्व दिया जाना चाहिए।

मत्ती 16:13-19 में प्रकाशबिन्दु मसीहा के रूप में यीशु पर पड़ता है, जिसकी हमें आवश्यकता है, परन्तु कुछ लोगों ने इन आयतों को घुमाकर पतरस को ऊंचा उठाने के लिए इस्तेमाल किया है। वे यह सिखाते हैं कि पतरस ही वह चट्टान है, जिस पर कलीसिया बनी। वे यह जिद्द करते हैं कि पतरस को ''बान्धने'' और ''खोलने'' का विशेष पद मिला है। वे प्रचार करते हैं कि पतरस कलीसिया का पहला मुखिया था और उसकी गद्दी उसके उत्तराधिकारियों को सौंप दी गई है और इस समय उसका उत्तराधिकारी ही आपकी और मेरी आवश्यकता है। परन्तु बाइबल इनमें से किसी विचार की शिक्षा नहीं देती।

जैसा कि पहले कहा गया है, ''पतरस'' नाम यूनानी भाषा के शब्द ''पैट्रोस'' का वैकल्पिक शब्द है, जिसका अर्थ ''पत्थर'' या ''चट्टान'' है। परन्तु *पैट्रोस* ''पत्थर'' के लिए जिसे आप हाथ में पकड़ सकते हों, साधारण शब्द है। [हिन्दी बाइबल में-अनुवादक] मत्ती 16:18 में इस्तेमाल किया गया ''पत्थर'' *पैट्रा* शब्द है, जो बड़ी चट्टान के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जैसी चट्टान पर कैसरिया फिलिप्पी बसा हुआ था।[11] जब यीशु ने कहा, ''तू पतरस है। और मैं इस चट्टान पर

अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' तो वह शब्दों का खेल खेल रहा था कि ''पतरस तू छोटा पत्थर है, परन्तु मैं एक विशाल चट्टान [यह सच्चाई जो तूने अभी-अभी मानी है] पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा।''

बांधने और खोलने की यही प्रतिज्ञा दो अध्यायों के बाद *सब* प्रेरितों के साथ की गई थी (मत्ती 18:18)।

मत्ती 16:13-19 सिखाता है कि पतरस एक विशेष व्यक्ति था, परन्तु यह यह नहीं सिखाता कि उसे पृथ्वी पर कलीसिया का पहला मुखिया बनाया जाना था। जब बाइबल के अनुसार, ऐतिहासिक और तर्कसंगत ढंग से इस बात की जांच की जाती है तो मत्ती 16 अध्याय में ज़ोर मसीह पर है पतरस पर, या किसी दूसरे मानवीय जीव पर नहीं।[12]

अफसोस की बात है कि मनुष्यों को महिमा देने का रुझान पतरस को महिमा देने की कोशिश से आरम्भ या समाप्त नहीं हो सकता। कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि सिखाने के लिए या आपकी प्रार्थनाएं परमेश्वर के पास पहुंचाने के लिए शारीरिक और आर्थिक रूप में समृद्धि पाने के लिए आप को इस या उस व्यक्ति की आवश्यकता होती है। हमारे समय में पास्टर पर आधारित कलीसिया का अधिक ज़ोर है, जो एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द हज़ारों लोगों की भीड़ इकट्ठी कर लेता है। आपकी आशा और भरोसा जब किसी मनुष्य पर होता है तो अन्त में निराशा ही मिलती है, चाहे वह व्यक्ति कितना ही भला क्यों न हो।

आपको किसी मानवीय जीव की नहीं, बल्कि *यीशु मसीह* की आवश्यकता है। यीशु स्वर्ग से आया और उसने शरीर की निर्बलताएं अपने ऊपर ले लीं (फिलिप्पियों 2:5-8)। ''वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौ भी निष्पाप निकला'' (इब्रानियों 4:15)। वह हमारी निर्बलताओं को समझता है, जिस कारण हमारी सहायता कर रहा है (इब्रानियों 2:18)। वह हमारे पक्ष में है और हमारा मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।

जेल में रहते हुए पौलुस ने लिखा था, ''... किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, ... परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ दी ...'' (2 तीमुथियुस 4:16, 17)। वह आप के भी अंग-संग रहेगा। उसने प्रतिज्ञा की है, ''मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)।

आपको एक लोग की आवश्यकता है

आपके लिए अपने उपाय में परमेश्वर ने आपको एक व्यक्ति देकर ही छोड़ नहीं दिया है। उसने आप को *लोग* भी दिए हैं, जो यीशु में आपके विश्वास के साझी हैं अर्थात जीवन के संघर्ष में आपके साथी हो सकते हैं।

आइए 18 और 19 आयतों में वापस जाते हैं, इस बार हम इन आयतों को अलग दृष्टिकोण से देखेंगे: ''और मैं भी तुझ से कहता हूं, तू पतरस है। और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा। ...'' ये आयतें *एक समूह* के बारे में बताती हैं, जिनका व्यक्ति से विशेष सम्बन्ध है।

यीशु ने कहा, ''मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा।'' ''कलीसिया'' शब्द का अनुवाद यूनानी भाषा के शब्द *ekklesia* से किया गया है। *एक्कलेसिया* एक मिश्रित यूनानी शब्द है, जिसका मूल अर्थ ''बुलाए हुए'' है।[13] कलीसिया के लोगों को ''बुलाए हुए लोग'' कहा गया

है, जिन्हें संसार में से यीशु के साथ एक नये सम्बन्ध में बुलाया जाता है। प्रेरितों के काम पुस्तक में लोगों को सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया था (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। जब उन्होंने यीशु पर विश्वास लाकर बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेकर प्रभु की बात मानी थी तो प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया था (प्रेरितों 2:38, 41, 47)। कलीसिया मसीह के लहू के द्वारा बचाए हुए लोगों की मण्डली या देह है (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:23, 25)।

कलीसिया मसीह के लिए *विशेष* लोग है। यीशु ने कहा, ''मैं इस चट्टान पर *अपनी* कलीसिया बनाऊंगा।'' ''कलीसिया'' शब्द एकवचन में है क्योंकि कलीसिया एक ही है (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 1:22, 23; 4:4; कुलुस्सियों 3:15)। इसके अलावा यह *उसकी* कलीसिया है अर्थात वही इसका स्वामी है और यह केवल उसी की है। निजी तौर पर कलीसिया के लोगों को ''मसीही'' कहा जाता है (प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16), जो ऐसा शब्द है, जिसका अर्थ है ''जो मसीह के हैं।'' सामूहिक रूप में, कलीसिया को ''मसीह की कलीसिया'' या ''मसीह की कलीसियाएं'' कहा गया है (रोमियों 16:16)[14] जिसका अर्थ है, वह ''कलीसिया, जो मसीह की है।''

''कलीसिया'' कहे जाने वाले लोगों के विशेष समूह का एक विशेष *आधार* है। यीशु ने कहा, ''मैं *इस चट्टान पर* अपनी कलीसिया बनाऊंगा।'' यहां ''चट्टान'' पतरस के अंगीकार को कहा गया है, जो बुनियादी सच्चाई है कि यीशु ही ''मसीह अर्थात जीवते परमेश्वर का पुत्र'' है। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता'' (1 कुरिन्थियों 3:11)। यीशु हमारी ''चट्टान [*पैट्रा*] है'' (1 कुरिन्थियों 10:4)। हर संस्था का आधार विचार, सिद्धान्त या लोग होते हैं–कई बार महान विचार, सिद्धान्त या लोग होते हैं पर कई बार इतने महान नहीं होते। कोई भी संस्था अपने आधार से अधिक मजबूत नहीं हो सकती। कलीसिया का आधार स्वयं यीशु मसीह है!

विशेष आधार वाले इस विशेष समूह की एक विशेष विशेषता है कि यह *अविनाशी* है। यीशु ने घोषणा की ''मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; *और अधोलोक के फाटक*[15] *उस पर प्रबल न होंगे।*'' ''अधोलोक'' का मूल अर्थ है ''अदृश्य'' और इसका इस्तेमाल कायामुक्त मृतकों के अदृश्य या दिखाई न देने वाले संसार को कहा गया है, जहां आत्माएं न्याय की प्रतीक्षा कर रही हैं।[16] इस संसार के लिए उसमें प्रवेश का ''फाटक'' शारीरिक *मृत्यु* है। यीशु ने कहा कि कोई भी इस पर प्रबल नहीं हो सकता, चाहे वह मृत्यु ही क्यों न हो।

बाद के इतिहास में यीशु की बातें सच साबित हुईं। शैतान ने यीशु को मार कर कलीसिया के बनने को रोकने की कोशिश में मृत्यु का इस्तेमाल किया। परन्तु यीशु की मृत्यु हमारे उद्धार का माध्यम बन गई। कलीसिया के बन जाने के बाद शैतान ने कलीसिया के *जारी रहने* को रोकने की कोशिश में मृत्यु का इस्तेमाल किया, जिसमें उसने कलीसिया के लोगों को मरवाया। शहीदों के लहू से कलीसिया और सिंच कर बढ़ती रही!

वास्तव में यदि कलीसिया के हर सदस्य की भी मृत्यु हो जाए तौ भी कलीसिया खत्म नहीं हो सकती, क्योंकि राज्य का ''*बीज* परमेश्वर का वचन है'' (लूका 8:11) और परमेश्वर का वचन अविनाशी है (1 पतरस 1:23–25)। जब तक वचन है, शुद्ध मन वाले लोगों द्वारा इसे पढ़ा जाने पर, उन लोगों के मनों में बीज बोया जाता है। जब बीज फल लाता है, जो आज्ञापालन होता

है और लोग कलीसिया में मिलाए जाते हैं (प्रेरितों 2:38, 41, 47)! जैसे यीशु के जन्म से पूर्व दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी, परमेश्वर ने एक राज्य स्थापित किया है, जो ''कभी नष्ट नहीं'' हो सकता (दानिय्येल 2:44)।

अन्त में, विशेष आधार पर विशेष लगने वाले इस विशेष समूह में एक विशेष गुण है कि यह *महिमा से भरा हुआ* है। यह परमेश्वर का *राज्य* है!

इस संस्था के विवरण के लिए इस्तेमाल किया गया हर शब्द हमारी समझ को बढ़ाता है कि यह कितनी अद्‌भुत है। बाइबल के हमारे वचन पाठ में दो शब्दों ''कलीसिया'' और ''राज्य'' का इस्तेमाल किया गया है। इस संसार के सम्बन्ध में इस विशेष समूह को कलीसिया अर्थात ''बुलाए हुए लोग'' कहा जाता है। परमेश्वर के सम्बन्ध में इसे राज्य कहा जाता है-जिन्होंने परमेश्वर के परोपकारी शासन के आगे अपने आपको समर्पित कर दिया है और उसकी सुरक्षा के अधीन आ गए हैं!

और जगहों पर दूसरे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है: यीशु के सम्बन्ध में, कलीसिया मसीह की देह है (इफिसियों 1:22, 23) जिनका उद्धारकर्त्ता से गहरा सम्बन्ध है, जिन्होंने उसकी इच्छा को मान लिया है। एक-दूसरे से सम्बन्ध में कलीसिया परमेश्वर का *परिवार* है (1 तीमुथियुस 3:15)। परमेश्वर हमारा पिता है, यीशु हमारा बड़ा भाई है और हम मसीह में भाई और बहनें हैं!

इन महान सच्चाइयों पर विचार करते हुए हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हम में से हर किसी की आवश्यकता यही लोग है!

अपने परिवार के साथ संसार का भ्रमण करते हुए हम एक बात याद रखते हैं कि हम कहीं भी जाएं हमें मसीह में भाई और बहनें मिल ही जाएंगे। हो सकता है कि वे हमारी भाषा न बोलते हों, परन्तु हमारा ऐसा बन्धन है, जो भाषा की सीमाएं रहने नहीं देता: यीशु के हमारा विश्वास और उसके काम के प्रति हमारी प्रतिबद्धता।

पैरिस की एक शाम का ध्यान आता है। अपने परिवार के साथ मैं बुधवार, मई 1, 1973 के दिन पैरिस में पहुंचा था। हमने पैरिस के मुख्य नगर में कलीसिया के इकट्ठा होने की जगह ऊपरी कमरे पर मिशनरी क्वार्टरों में रहने का प्रबन्ध किया था। फ्रांसीसी प्रचारक भाई कार्डिनल बुधवार की आराधना के लिए समय से आधा घण्टा पहले आ गए, हमें भवन में ले गए और ऊपरी कमरा दिखाया। हमने जल्दी-जल्दी मुंह-हाथ धोया और आराधना के लिए आने वाले लोगों से मिलने आ गए। 1 मई को यूरोप में छुट्टी होती है और अधिकतर लोग नगर से बाहर चले जाते हैं, जिस कारण थोड़े से लोग मिलते हैं। हम थोड़े से शब्दों और अधिक इशारों से बातें करने की कोशिश करने के लिए खड़े हो गए। कुछ देर बाद प्रचारक मेरे परिवार को बाहर ले आया, गली की ओर इशारा करके कहने लगा, ''आर्च डि ट्रायंफ।'' पहले हमें लगा कि वह अगले दिन नगर के दृश्य दिखाने के लिए ले जाएगा। अन्त में हमें समझ आया कि नगर दिखाने के लिए हमें वह उसी रात ले जाना चाहता था। बड़ी मुश्किल से हमने उसे समझाया कि हमारी इच्छा उस रात नगर देखने की नहीं बल्कि अपने भाइयों और बहनों के साथ आराधना करने की थी।

अन्त में हम एक छोटे से कमरे में वापस आ गए, जहां सब लोग एक मेज़ के इर्द-गिर्द बैठ गए। भाई कार्डिनल फ्रांसीसी भाषा में कुछ गीत गाने लगे। हमें अंग्रेज़ी से मिलते-जुलते सुर समझ आ रहे थे। भाई कार्डिनल ने फ्रांसीसी भाषा में प्रार्थना की और एक बार मुझे भी अंग्रेज़ी में प्रार्थना

करने को कहा। जब वे बात करते थे तो हमें उनके कुछ शब्द समझ आते थे। एक बार तो वह हमारा ही उदाहरण दे रहे थे। हम घर से हज़ारों मील दूर एक ऐसी जगह पर थे, जहां की भाषा हम बोल नहीं सकते थे, परन्तु फिर भी हम परिवार के साथ थे।

आमतौर पर मैं जहां भी प्रचार करता हूं, तो लोगों द्वारा बपतिस्मा लेने के बाद हम लोग गोल चक्कर बनाकर प्रार्थना करते हैं। मैं नये मसीही लोगों को बताता हूं, ''यह छोटा सा दायरा आपका नया परिवार है, जो संसार के गिर्द है! आप किसी भी देश में चले जाएं आपको इसी विश्वास वाले और लोग मिल जाएंगे जो आपसे प्यार करेंगे और आपकी परवाह करेंगे!''

आपको इसी आवश्यकता है। प्रभु को *मालूम था* कि आपको इसकी आवश्यकता पड़ेगी, इसीलिए उसने लोगों का एक विशेष समूह दिया है, जिसे कलीसिया कहा जाता है।

अफसोस की बात है कि यह प्रबन्ध किसी भी प्रकार से स्वचालित नहीं है। हो सकता है कि आप कलीसिया के लोग हों पर फिर भी सबसे अकेले हों। किसी ने कहा है कि अकेलापन ''इतना टापू में होने से अलग नहीं है।''[17] किसी और ने कहा है कि अकेलापन ''एक जेल है, जिसे भीतर से ही खोला जा सकता है।''[18] परमेश्वर ने आपके जीवन में आशीष देने के लिए कलीसिया बनाई है, परन्तु इस उपाय को आपको *अधिकार में लेना* पड़ेगा। आग बुझाने वाले यन्त्र को कभी-कभी चैक करने की तरह कलीसिया की आराधना में कभी-कभार जाकर इसे अधिकार में नहीं लिया जा सकता, बल्कि आपको सम्बन्ध बनाने पड़ेंगे। इसके लिए कलीसिया के जीवन और काम में प्रवेश आवश्यक है। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको हमारे लिए परमेश्वर के अदभुत उपायों की समझ आएगी!

समय-समय पर मुझे इस प्रकार के दु:खी करने वाले शब्द सुनाई देते हैं: ''हम नई जगह चले गए हैं। ... हमें यहां छह महीने हो गए हैं ... परन्तु अभी तक हमारा कोई दोस्त नहीं बना!''[19] ऐसी बातें सुनकर मुझे लगता है, ''इन्हें प्रभु की कलीसिया की आवश्यकता है! यदि मेरा परिवार वहां चला जाए जो हमें पास ही एक-दूसरे का सहारा मिल जाएगा।'' मैं कलीसिया के लोगों को अक्सर यह कहते सुनता हूं, ''कलीसिया न होती तो पता नहीं मैं क्या करता'' और ''पता नहीं लोग कलीसिया के बिना रहते हैं!''

मुझे गलत न समझें। मैं यह नहीं कह रहा कि कलीसिया एक-दूसरे को सहारा देने के लिए आत्मिक समूह से बढ़कर कुछ नहीं है। परमेश्वर ने इसे ''परमेश्वर का ना ना प्रकार ज्ञान प्रकट'' (इफिसियों 3:10) करने के लिए ''सत्य का खम्भा और नींव'' बनाया है (1 तीमुथियुस 3:15)। परन्तु इस स्वर्गीय मिशन को पूरा करते हुए यह जीवन के तूफ़ान में घिरे लोगों के लिए राहत का काम भी करती है।

इसके अलावा, मैं यह *नहीं* कह रहा कि कलीसिया द्वारा दी जाने वाली सहायता एक तरफा उपाय होना चाहिए। कई लोग कलीसिया से अनुचित लाभ लेते हैं। उनकी सोच होती है कि ''दूसरे लोग *मेरी आवश्यकताएं* पूरी करने के लिए ही हैं।'' कलीसिया *एक-दूसरे का* आत्मिक सहारा है अर्थात हमें एक दूसरे की सहायता करना आवश्यक है।

मत्ती 16:13-19 यह घोषणा करता है कि हमें कलीसिया की आवश्यकता है!

सारांश

मत्ती 16 में प्रतिज्ञा की हुई कलीसिया/राज्य को यीशु ने कब बनाया ? उसकी इस महान प्रतिज्ञा के पूरा होने की बात प्रेरितों 2 अध्याय में मिलती है।

मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने खड़ा होकर *उस मनुष्य* के विषय में बताया था, जिसके बारे में हम सब को जानने की आवश्यकता है।

> सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।
>
> तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें ? पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे (प्रेरितों 2:36-38)।

दूसरे शब्दों में पतरस ने कहा कि ''मन फिराकर बपतिस्मा लेने पर तुम्हारे *पिछले* पाप मिटा दिए जाएंगे यानी तुम्हें पापों से क्षमा मिल जाएगी। तुम्हें भविष्य में भी सहायता मिलेगी, यानी मसीही जीवन जीने में सहायता के लिए तुम्हें परमेश्वर का आत्मा मिलेगा!'' यह सब यह कहने का दूसरा ढंग है कि ''बपतिस्मा लेने पर, तुम्हारा उस मनुष्य से जिसकी तुम्हें आवश्यकता है, बचाने वाला और सामर्थ देने वाला सम्बन्ध बन जाएगा।'' पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने *मसीह में बपतिस्मा लिया* है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26, 27)।

प्रेरितों 2:41 में कहा गया है, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।'' आयत 47 कहती है, ''और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु *प्रति दिन* उन में *मिला देता* था।'' कई प्राचीन हस्तलेखों में ''और प्रभु प्रतिदिन कलीसिया में मिला देता था'' शब्द हैं (देखें KJV)। बपतिस्मा लेने पर वे केवल यीशु में ही नहीं लेते थे, बल्कि उसकी देह अर्थात कलीसिया में भी बपतिस्मा लेते थे (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 1:22, 23)। उस देह में उनके सम्बन्ध के बारे में प्रेरितों 2:42, 44 में कहा गया है, ''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे ...'' जो कुछ उनके पास था, वे उसे एक-दूसरे के साथ *साझा* करते थे। इस प्रकार इन नये मसीही लोगों को वे लोग भी मिल गए जिनकी उन्हें आवश्यकता थी।

आपको एक व्यक्ति अर्थात यीशु मसीह की आवश्यकता है। आपको लोगों के समूह अर्थात प्रभु की कलीसिया की आवश्यकता है। यदि आपने मसीह में और उसकी देह में बपतिस्मा नहीं लिया है तो मेरा आग्रह है कि आप अभी डुबकी ले लें और अपने जीवन की बड़ी आवश्यकताओं को पूरा करें।

टिप्पणियां

[1]बैटसल बैरट बैक्सटर, *वैन लाइफ टम्बल्स इन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1974), 22. [2]''नेटवर्क'' और ''सहायक समूह'' दूसरे लोगों के साथ समर्थन करने वाले सम्बन्ध के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले वर्तमान वाक्यांश हैं। आपने इलाके के हिसाब से जो भी वर्तमान और समझ आने योग्य वाक्यांश हों उनका इस्तेमाल करें. [3]लूका 3:1. [4]यीशु ने ध्यान दिलाया कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ही ''आने वाले एलिय्याह'' था (तुलना करें मत्ती 11:14)। [5]यीशु लोगों के मनों के विचार पढ़ सकता था। इसलिए उसे मेरी तरह चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं थी। [6]''अपना पैर मुंह में डालना'' का अर्थ बेमौका बात कहकर अपने आप को परेशानी में डालना है। [7]''बार-योना'' का मूल अर्थ ''योना का पुत्र'' है। इसका आधुनिक अनुवाद ''यूहन्ना का पुत्र?'' ''जॉन का पुत्र,'' ''जॉनसन'' हो सकता है। [8]अमेरिका में और अन्य जगहों पर प्रशंसा करने (या पुरस्कार देने) के लिए स्कूली बच्चों को आमतौर पर क्लास के सामने खड़ा होने के लिए कहा जाता है। [9]अध्याय 26. [10]1973 का संस्करण।

[11]*पैट्रोस* और *पैट्रा* में तीन मुख्य अन्तर शब्द जोड़, लिंग और अर्थ के हैं। [12]इस संगठन द्वारा ''जिसकी तुम्हें आवश्यकता है'' के रूप में केवल पतरस को ही ऊंचा नहीं किया जाता। कई लोग यह ज़ोर देते हैं कि यीशु तक पहुंचने के लिए ''माता के स्पर्श'' (यानी मरियम) की आवश्यकता होती है। वह यह भी ज़ोर देते हैं कि आत्मिक मामलों में विशेष प्रभाव रखने वाले ''सन्त'' भी होते हैं। [13]*एक्कलेसिया* शब्द *एक* (में से) और *केलियो* (बुलाना) से लिया गया है। [14]''कलीसिया'' शब्द हर जगह मौजूद उन लोगों के लिए विश्वव्यापी अर्थ में इस्तेमाल किया जा सकता है कि जिन्हें यीशु के साथ नये सम्बन्ध में संसार में से बुलाया गया है। इस अर्थ में इस्तेमाल होने पर यह शब्द एकवचन है (मत्ती 16:18)। ''कलीसिया'' बुलाए हुए लोगों के लिए किसी विशेष क्षेत्र में बताने के लिए मण्डली के अर्थ में ही इस्तेमाल किया जा सकता है। इस अर्थ में इस्तेमाल किए जाने पर बहुवचन का इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे रोमियों 16:16 में किया गया है। ... निश्चय ही नये नियम में कलीसिया को और नामों से भी बुलाया गया है, जैसे ''परमेश्वर की कलीसिया'' (प्रेरितों 20:28)। और बहुत से शब्दों का मूल अर्थ ''मसीह की कलीसिया'' जैसा ही है। [15]अंग्रेज़ी के किंग जेम्स संस्करण में ''नरक'' के लिए शब्द है। किंग जेम्स वाले बाइबल के संस्करण में ''hell'' तीन अलग-अलग यूनानी शब्द का अनुवाद हैं,: (1) *गेहन्ना,* जो ''नरक की आग'' के लिए शब्द है (मत्ती 5:22; आदि); (2) *हेडिस,* ''अदृश्य [संसार]'' के लिए शब्द अर्थात मृतकों का संसार (प्रेरितों 2:27; आदि); और *टारटरस* दुष्ट मृतकों की स्थिति को दर्शाता शब्द (2 पतरस 2:4)। मत्ती 16:18 में मिलने वाला शब्द *हेडिस* है। यह सच है कि नरक की शक्तियां (यानी शैतान और उसके दूत) कलीसिया का नाश नहीं कर सकते और परोक्ष रूप से यह आयत यही बताती है, परन्तु यहां इस्तेमाल किए गए शब्दों का मूल अर्थ यह नहीं है। [16]लूका 16:19-31; 23:43; प्रेरितों 2:31; यहून्ना 20:17. [17]लियोनर्ड हैरल्ड लुईस लैविंसन, *वेबस्टर'स अनफ्रेड डिक्शनरी* (न्यू यार्क, न्यू यार्क: कोलियर बुक्स, 1967), 143 में दोहराया गया, हैरल्ड डब्ल्यू. रूओप। [18]लियोनर्ड हैरल्ड लुईस लैविंसन, *वेबस्टर'स अनफ्रेड डिक्शनरी* (न्यू यार्क, न्यू यार्क: कोलियर बुक्स, 1967), 143 द्वारा ''अनाबैल्ल ज्यूरिक'' के नाम। [19]एक दु:खद स्थिति ध्यान में आती है, जिसमें एक युवती को, जो मेरी बेटी की सहेली है, खून का कैंसर हो गया। उसका परिवार रोडे नामक टापू पर बस गया था, जहां वे किसी को नहीं जानते थे; दु:ख की इस घड़ी में उनकी सहायता के लिए कोई मित्र या रिश्तेदार पास नहीं था।